PUNYASHLOK AHILYADEVI HOLKAR

SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR

पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर
सोलापूर विद्यापीठ
।। विद्यया संपन्नता ।।
NAAC Accredited-2022
'B++' Grade (CGPA-2.96)

Name of the Faculty – Humanities

मानव्यविद्या शाखा

New CBCS Pattern Syllabus

चयनाधारित श्रेयांक पद्धति

Name of the Course B. A. III (Hindi) Sem. V

With effect from June - 2024-25

बी.ए. भाग- तीन, सत्र- 5, प्रश्नपत्र- VII

विशेष लेखक: काशीनाथ सिंह

अध्यापन वर्षः 2024-25, 2025-26, 2026-27

परीक्षाएँ: 2025, 2026, 2027

प्रस्तावनाः (Introduction)

काशीनाथ सिंह भारतीय साहित्य के प्रमुख कथाकारों में से एक हैं। उन्होंने उपन्यास, नाटक, संस्मरण और कुछ आलोचनात्माक आलेख भी लिखे। उन्होंने अपने समय और समाज के प्रति सावधान होकर पूरे दायित्व से लेखन किया। सन् 1960 के बाद के भारतीय समाज की वास्तविक स्थितियाँ निरन्तर व्यक्त हो ही रही थीं, किन्तु भयावहता कम होने को राजी नहीं थी। ऐसे में, इन परिस्थियों की बुनियाद ढूँढने, कुछ नया तलाशने, और शिद्दत से उन गुत्थियों को सुलझाने की ओर काशीनाथ सिंह ने अपनी पैनी दृष्टि फिराई। वे जनाकांक्षा और व्यवस्था के बीच उत्पन्न विशाल खाई को तलाशने में तल्लीन हुए। उनकी कहानियाँ आम आदमी की जीवनी और सामाजिक संघर्षों पर आधारित हैं। काशीनाथ सिंह की कहानियाँ भारत की आजादी के बाद संबंधों के नए बदलाव, प्रेम के नए चेहरे, स्त्री- पुरुष संबंध, अकेलापन, बाजारवाद, भूमंडलीकरण, नगरीकरण से उत्पन्न समस्याएँ विडंबनाओं को परिचित कराती है। काशीनाथ सिंह की कहानियाँ साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं और उनकी विशेषताएँ उन्हें अन्य कथाकारों से अलग बनाती हैं।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: (Objective of the Course)

1. काशीनाथ सिंह के जीवन परिचय से परिचित कराना।
2. काशीनाथ सिंह की कहानियों से अवगत कराना।
3. कहानियों के भाव पक्ष और कला पक्ष से अवगत कराना।
4. छात्रों में राष्ट्रीय, सामाजिक एवं मानवीय दृष्टिकोण विकसित कराना।
5. छात्रों में सामाजिक प्रतिबद्धता एवं दायित्व बोध निर्माण कराना।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम : (Learning Outcomes)

1. छात्र काशीनाथ सिंह के जीवन परिचय से परिचित होंगे।
2. काशीनाथ सिंह की कहानियों से अवगत होंगे।
3. कहानियों के भाव पक्ष और कला पक्ष से अवगत होंगे।
4. छात्रों में राष्ट्रीय, सामाजिक एवं मानवीय दृष्टिकोण विकसित होगा।
5. छात्रों में सामाजिक प्रतिबद्धता एवं दायित्व बोध निर्माण होगा।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया: (Teaching Learning Process)

1. कक्षा व्याख्यान
2. गूट चर्चा

CBCS PATTERN B. A. III, SEM. 5, Paper- VII

[Credits: Theory-(04), Practical's-(00)]

Total Theory Lectures-(60), Credit 4

पाठ्यपुस्तक: प्रतिनिधि कहानियाँ- काशीनाथ सिंह,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ल्ली
(इस संकलन से 'मुसइचा, लाल किले के बाज़, सुधीर घोषाल, कविता की नई तारीख' कहानी अध्ययन के लिए नहीं है)

अध्ययनार्थ विषय

इकाई- 1 : व्यक्तित्व एवं कृतित्व **(Lectures 15,Credit 1)**

1. काशीनाथ सिंह: व्यक्तित्व
2. काशीनाथ सिंह: कृतित्व
3. कहानीकारः काशीनाथ सिंह

इकाई- 2 : कहानियाँ **(Lectures 15,Credit 1)**

1. पहला प्यार
2. तीन काल-कथा
3. आखिरी रात

इकाई- 3 : कहानियाँ **(Lectures 15,Credit 1)**

1. चोट
2. जंगल जातकम्
3. बैल

इकाई- 4 : कहानियाँ **(Lectures 15,Credit 1)**

1. सुख
2. दलदल
3. सूचना

प्रश्नपत्र का स्वरूप एवं अंक विभाजन

प्रश्नः1	बहुविकल्पी आठ प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	08
प्रश्नः2	लघुत्तरी प्रश्न (6 में से 4) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	12
प्रश्नः3	ससंदर्भ व्याख्या (3 में से 2) (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	10
प्रश्नः4	दीर्घोत्तरी प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	10
		कुल अंकः 40

Equivalent subject for old syllabus

Sr. No.	Name of the old Paper SEM-V	Name of the New Paper SEM-V
1.	विशेष लेखक: भगवानदास मोरवाल	विशेष लेखक: काशीनाथ सिंह

संदर्भ ग्रंथ

1. काशीनाथ सिंह का चिंतन और साहित्य, ऋचा श्रीवास्तव, मनीष प्रकाशन, दिल्ली
2. कहानी नई कहानी, नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद
3. काशी के नाम, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
4. बातें हैं बातों का क्या, संपादक पल्लव, राजकमल प्रकाशन
5. हंसा करो पुरातन बात, संपादक शशिकुमार सिंह
6. कहन पत्रिका का विशेषांक 'साठ के काशी और काशी का साठ', संपादक- मनीष दुबे, 2000 (पुस्तक रूप में कासी पर कहन मीरा पब्लिकेशंस, न्याय मार्ग, इलाहाबाद से)
7. 'बनास जन' का विशेषांक 'गल्पेतर गल्प का ठाठ' 'काशी का अस्सी' पर केंद्रित - 2010 (संपादक- पल्लव, पुस्तक रूप में 'अस्सी का काशी: गल्पेतर गल्प का ठाठ', साहित्य भंडार, चाहचंद रोड, इलाहाबाद से)
8. संबोधन का विशेषांक, संपादक- कमर मेवाड़ी (अक्टूबर 2012 - जनवरी 2013)
9. http://gadyakosh.org
10. https://www.youtube.com/watch?v=Y2LRmQ8G4KI

बी. ए. भाग- तीन, सत्र- 5, प्रश्नपत्र- VIII

साहित्यशास्त्र

अध्यापन वर्षः 2024-25, 2025-26, 2026-27

परीक्षाएँ- 2025, 2026, 2027

प्रस्तावनाः (Introduction)

किसी रचना के गठन ,भाव तथा मूल्य उद्घाटन के लिए साहित्यशास्त्र का ज्ञान होना आवश्यक होता है। साहित्यशास्त्र के अध्ययन से छात्रों की दृष्टि एवं सोच में परिवर्तन आता है। सहित्य के माध्यम से समाज की ओर देखने का दृष्टिकोण बदलता है। साहित्य के कलापक्ष को समझने के लिए और मूल्यों को बनाए रखने में साहित्यशास्त्र का अध्ययन विशेष महत्व रखता है।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: (Objective of the Course)

1. साहित्य के स्वरूप को समझाना।
2. साहित्य के भेदों से अवगत कराना।
3. साहित्य की नवीन विधाओं का परिचय कराना।
4. गद्य (विचार) तथा पद्य (संवेदना) के तत्वों को समझाना।
5. शब्द की शक्ति को समझाना।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणामः (Course Learning Outcomes)

1. साहित्य के स्वरूप से अवगत होंगे।
2. साहित्य के विविध विधाओं (तत्वों, स्वरूप, विशेषताओं) से अवगत होंगे।
3. साहित्य की नई विधाओं से परिचित होंगे।
4. गद्य तथा पद्य के तत्वों से परिचित होंगे।
5. शब्द की शक्ति को समझेंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रियाः (Teaching Learning Process)

1.कक्षा व्याख्यान

2.गूट चर्चा

CBCS PATTERN B. A. III, SEM. 5, Paper- VIII

[Credits: Theory-(04), Practical's-(00)]

Total Theory Lectures-(60), Credit 4

अध्ययनार्थ विषयः

इकाई- 1: साहित्य **(Lectures 15,Credit 1)**

1. साहित्य: परिभाषा, प्रेरणा तथा प्रयोजन (भारतीय)
2. साहित्य के तत्व
3. शब्द- शक्ति का स्वरूप एवं भेद

इकाई- 2: काव्यभेद **(Lectures 15,Credit 1)**

1. महाकाव्य (भारतीय तत्व)
2. खंडकाव्य का स्वरूप
3. प्रगीत काव्य और उसकी विशेषताएँ
4. गजल का स्वरूप और अंग

इकाई- 3: गद्य भेद **(Lectures 15,Credit 1)**

1. नाटकः स्वरूप, अर्थ, परिभाषा एवं पाश्चात्य तत्व
2. एकांकीः स्वरूप, अर्थ, परिभाषा एवं तत्त्व
3. उपन्यासः स्वरूप, अर्थ, परिभाषा एवं तत्व
4. कहानीः स्वरूप, अर्थ, परिभाषा एवं तत्व

इकाई- 4: अलंकार **(Lectures 15,Credit 1)**

1. शब्दालंकार-अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति

   (लक्षण और उदाहरण अपेक्षित है)

2. अर्थालंकार-उपमा, उत्प्रेक्षा,रूपक,अतिशयोक्ति

   (लक्षण और उदाहरण अपेक्षित है)

प्रश्न पत्र का स्वरूप एवं अंक विभाजन

प्रश्न 1. बहुविकल्पी आठ प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	08
प्रश्न 2. लघुत्तरी प्रश्न - दो या तीन वाक्यों में उत्तर अपेक्षित (6 में से 4) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	12
प्रश्न 3. दीर्घोतरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	10
प्रश्न 4. दीर्घोतरी प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	10
कुल अंक	**40**

Equivalent Subject for old Syllabus

Sr. No.	Name of the old paper Sem. V	Name of the paper Sem. V
01	काव्यशास्त्र	साहित्यशास्त्र

संदर्भ ग्रंथ

1.भगीरथ मिश्र - काव्यशास्त्र
2. डॉ. गोविंद त्रिगुणायत - शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत
3. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त - भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत
4. डॉ. तेजपाल चौधरी - भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य की रूपरेखा
5. डॉ.चंद्रभानु सोनवणे - साहित्यशास्त्र
6. डॉ. संजय नवले - साहित्यशास्त्र
7. सुमन मलिक - साहित्य विवेचन
8. डॉ. विठ्ठल भालेराव - भारतीय साहित्यशास्त्र
9. डॉ. ज्ञानराज गायकवाड - भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र
10. कुमार विमल सौंदर्यशास्त्र के तत्व
11. डॉ.रविंद्रकुमार शिरसाट - साहित्यिक विमर्श
13. रामेश्वरलाल खंडेलवाल - आलोचना के आधारस्तंभ
14. सं. शांतिस्वरूप गुप्त - साहित्यिक निबंध
15. देशराजसिंह भाटी - भारतीय पाश्चात्य काव्यशास्त्र

बी.ए. भाग- तीन, सत्र- 5, प्रश्नपत्र- IX

आदिकालीन और मध्यकालीन हिंदी साहित्य का इतिहास

(विक्रमी संवत 1050 से विक्रमी संवत 1900 तक)

अध्यापन वर्ष - 2024-25, 2025-26, 2026-27

परीक्षाएँ - 2025, 2026, 2027

प्रस्तावना: (Introduction)

हिंदी साहित्य के इतिहास की परंपरा एक हजार वर्षों से भी अधिक है। विक्रमी संवत 1050 से 1900 तक की विशाल अवधि में हिंदी साहित्य विभिन्न दिशाओं और स्थितियों से विकसित होता हुआ आगे बढ रहा है। हिंदी साहित्य को विकसित करने में कालजयी रचनाकारों और उनकी रचनाओं का योगदान अनन्य साधारण है। इस दौर में लिखा गया साहित्य इस देश की तत्कालीन परिस्थितियों का दर्पण बनकर हमारे सामने आता है। इसके माध्यम से हम उस युग के इतिहास, भूगोल, समाज, राजनीति, धर्म, अर्थनीति, शिक्षा आदि चीजों का अध्ययन करते हैं। वर्तमान समय में साहित्य की गद्य एवं पद्य विधाओं का अध्ययन करते हुए साहित्येतिहास की ओर मार्गदर्शक के रूप में देख सकते है।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: (Objective of the Course)

1. हिंदी साहित्य के इतिहास के प्रति रूचि जाग्रत कराना।
2. हिंदी साहित्य इतिहास लेखन और उसकी परंपरा से अवगत कराना।
3. हिंदी साहित्य का काल विभाजन और उसके नामकरण से अवगत कराना।
4. हिंदी साहित्य के विभिन्न काल और उस काल के रचनाकारों से अवगत कराना।
5. हिंदी साहित्य के विभिन्न कालों के साहित्य की अंतर्वस्तु से अवगत कराना।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम: (Learning Outcomes)

1. हिंदी साहित्य के इतिहास के प्रति रूचि जाग्रत होंगे।
2. हिंदी साहित्य इतिहास लेखन और उसकी परंपरा से अवगत होंगे।
3. हिंदी साहित्य का काल विभाजन और उसके नामकरण से अवगत होंगे।
4. हिंदी साहित्य के विभिन्न काल और उस काल के रचनाकारों से अवगत होंगे।
5. हिंदी साहित्य के विभिन्न कालों के साहित्य की अंतर्वस्तु से अवगत होंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया: (Teaching Learning Process)

1. कक्षा व्याख्यान
2. गूट चर्चा

CBCS PATTERN B. A. III, SEM. 5, Paper- IX
[Credits: Theory-(04), Practical's-(00)]
Total Theory Lectures-(60), Credit 4

अध्ययनार्थ विषय

इकाई- 1: हिंदी साहित्य और आदिकाल (Lectures 15, Credit 1)

1. काल विभाजन के आधार
2. हिंदी साहित्य का काल विभाजन तथा नामकरण
3. आदिकाल की परिस्थितियाँ : सामाजिक, राजनीतिक
4. रासो साहित्य की विशेषताएँ
5. रासो साहित्य की प्रतिनिधि रचनाएँ : पृथ्वीराज रासो, बीसलदेव रासो
6. आदिकाल के प्रतिनिधि रचनाकार : अमीर खुसरो, विद्यापति

इकाई- 2: निर्गुण भक्ति (Lectures 15, Credit 1)

1. भक्तिकाल की परिस्थितियाँ : सामाजिक, राजनीतिक
2. ज्ञानाश्रयी शाखा की अवधारणा और उसकी विशेषताएँ
3. प्रेमाश्रयी शाखा की अवधारणा और उसकी विशेषताएँ
4. प्रतिनिधि रचनाकार- संत कबीर, मलिक मुहम्मद जायसी

इकाई- 3: सगुण भक्ति (Lectures 15, Credit 1)

1. रामभक्ति काव्य की अवधारणा और उसकी विशेषताएँ
2. कृष्णभक्ति काव्य की अवधारणा और उसकी विशेषताएँ
3. प्रतिनिधि रचनाकार- गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास

इकाई- 4: रीतिकाल (Lectures 15, Credit 1)

1. रीतिकाल: नामकरण
2. रीतिकाल की परिस्थितियाँ: राजनीतिक एवं धार्मिक
3. रीतिकालीन साहित्य की विशेषताएँ
4. रीतिकाल के प्रतिनिधि रचनाकार- भूषण, बिहारी, घनानंद

प्रश्नपत्र का स्वरूप एव अंक विभाजन

प्रश्न 1 बहुविकल्पी 8 प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	08
प्रश्न 2 लघुत्तरी प्रश्न (दो या तीन वाक्यों में उत्तर अपेक्षित) (6 में से 4) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	12
प्रश्न 3 दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	10
प्रश्न 4 दीर्घोत्तरी प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	10

कुल अंक 40

Equivalent subject for old syllabus

Sr. No.	Name of the Old Paper Sem. – V	Name of the New Paper Sem. – V
1.	आदिकालीन और मध्यकालीन हिंदी साहित्य का इतिहास (विक्रमी संवत 1050 से विक्रमी संवत 1900 तक)	आदिकालीन और मध्यकालीन हिंदी साहित्य का इतिहास (विक्रमी संवत 1050 से विक्रमी संवत 1900 तक)

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य : बीसवीं शताब्दी - नदंदुलारे वाजपेयी
3. हिंदी साहित्य : संवेदना और विकास - रामस्वरूप चतुर्वेदी
4. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह
5. आदिकालीन हिंदी साहित्य के अध्ययन की दिशाएँ - अनिल राय
6. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेंद्र
7. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – गणपतिचंद्र गुप्त
8. हिंदी साहित्य का इतिहास – लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
9. http://gadyakosh.org
10. https://en.wikipedia.org/wiki

https://www.hindisahity.com/hindi-sahitya-ka-kaal-vibhajan-aur-naamkaran/

बी. ए. भाग- तीन, सत्र- 5, प्रश्नपत्र- X

प्रयोजनमूलक हिंदी

अध्यापन वर्ष : 2024-25, 2025-26, 2026-27

परीक्षाएँ : 2024, 2025, 2026, 2027

प्रस्तावना: (Introduction)

प्रयोजनमूलक हिंदी एक कार्यालयींन हिंदी से संबधित पाठ्यक्रम है| राजभाषा हिंदी, प्रशासन और कार्यालय की भाषा के रूप में विकसित हुई। सूचना प्रौद्योगिकी के रूप में इसका महत्व और प्रासंगिकता अधिक बढ़ गयी है। हिंदी भाषा जनसंचार माध्यमों में निरंतर नए आयामों को उद्घाटित कर रही है। परंपरागत संदर्भ स्रोतों के सिवा अब भाषा और लिपि के नए संसाधन भी विकसित हो रहे हैं। हिंदी भाषा के इस प्रयोजनमूलक रूप का और उसके विविध आयामों का अध्ययन महत्वपूर्ण है। वैश्वीकरण के युग में विश्वमंच पर हिंदी की स्वीकार्यता को देखकर हर क्षेत्र में सरकारी कार्यालय, जनसंचार माध्यम तथा शैक्षिक संस्थानों में सभी जगह पर हिंदी माध्यमों में कार्यरत कुशल व्यक्ति की आवश्यकता है| इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए व्यावहारिक एवं कार्यालयीन हिंदी का पाठ्यक्रम प्रयोजनमूलक हिंदी के रूप में तैयार किया है।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: (Objective of the Course)

1. प्रयोजनमूलक हिंदी के स्वरुप एवं विकास से परिचित कराना।
2. कार्यालयीन पत्राचार से अवगत कराना।
3. प्रयोजनमूलक हिंदी के माध्यम से रोजगारपरक कौशल विकसित कराना।
4. वृत्तांत लेखन के व्यावहारिक ज्ञान को वृद्धिंगत कराना।
5. विविध आधुनिक संदर्भ स्रोतों से अवगत कराना।
6. आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तथा नवजनसंचार माध्यमों से परिचित कराना।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम: (Course Learning Outcomes)

1. प्रयोजनमूलक हिंदी के स्वरूप एवं विकास से परिचित होंगे।
2. कार्यालयीन पत्राचार के स्वरूप से परिचित होंगे।
3. छात्रों में रोजगारपरक कौशल विकसित होगा।
4. वृत्तांत लेखन के व्यावहारिक ज्ञान से परिचित होंगे।
5. आधुनिक विविध संदर्भ स्रोतो से परिचित होंगे।
6. आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तथा नव जनसंचार माध्यमों से परिचित होंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया: (Teaching Learning Process)

1. कक्षा व्याख्यान
2. गूट चर्चा
3. कार्यालयीन पत्र लेखन
4. हिंदी के रोजगारपरक क्षेत्र को भेंट

CBCS PATTERN B. A. III, SEM. 5, Paper- X

[Credits: Theory-(04), Practical's-(00)]

Total Theory Lectures-(60), Credit 4

अध्ययनार्थ विषय

इकाई -1 : प्रयोजनमूलक हिंदी (Lectures 15, Credit 1)

1. प्रयोजनमूलक हिंदी: अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूपगत विशेषताएँ
2. प्रयोजनमूलक हिंदी: व्यवहार क्षेत्र
3. प्रयोजनमूलक हिंदी की उपयोगिता

इकाई -2 : जनसंचार माध्यम (Lectures 15, Credit 1)

1. समाचार लेखन के तत्व

2. समाचार लेखक के गुण

3. वृत्तांत लेखन (सामाजिक, महाविद्यालयीन, प्राकृतिक आपदाएँ एवं दुर्घटनाएँ आदि संदर्भ पर)

इकाई -3 : कार्यालयीन पत्राचार (Lectures 15, Credit 1)

1. कार्यालयीन पत्राचार: स्वरूप एवं प्रकार

2. नौकरी के लिए आवेदन पत्र

3. पदाधिकारियों के नाम पत्र

4. सरकारी पत्र- अधिसूचना, कार्यालय ज्ञापन, कार्यालय आदेश

इकाई - 4 : संदर्भ स्रोत (Lectures 15, Credit 1)

1. कोश ग्रंथ: सामान्य परिचय

2. ई संदर्भ : विकिपीडिया, ई-समाचार, ब्लॉग लेखन - सामान्य परिचय

3. हिंदी पत्र-पत्रिकाएँ: सामान्य परिचय

4. पारिभाषिक शब्दावली: परिशिष्ट के आधारपर 25 शब्द और 25 वाक्यांश

प्रश्नपत्र का स्वरूप एवं अंक विभाजन

प्रश्नः1	बहुविकल्पी आठ प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	08
प्रश्नः2	लघुत्तरी प्रश्न (इकाई 4 पर) (6 में से 4)	12
प्रश्नः3	दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	10
प्रश्नः4	दीर्घोत्तरी प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	10
	कुल अंक	**40**

Equivalent Subject for Old Syllabus

Sr. No	Name of the Old paper SEM-V	Name of the New Paper SEM-V
1.	प्रयोजनमूलक हिंदी	प्रयोजनमूलक हिंदी

संदर्भ ग्रंथ

1. विनोद गोदरे - प्रयोजनमूलक हिंदी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

2. भोलानाथ तिवारी - राजभाषा हिंदी

3. डॉ.दंगल झाल्टे - प्रयोजनमूलक हिंदी: सिध्दांत और प्रयोग

4. कैलाशनाथ पांडेय - प्रयोजनमूलक हिंदी की नई भूमिका

5. सं.डॉ.रवींद्रनाथ श्रीवास्तव - प्रयोजनमूलक हिंदी

6. डॉ.अर्जुन तिवारी - संपूर्ण पत्रकारिता

7. डॉ. माधव सोनटक्के - प्रयोजनमूलक हिंदी प्रयुक्ति और अनुवाद

8. डॉ. चंद्र प्रकाश मिश्र- मीडिया लेखनः सिद्धांत और व्यवहार, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली

9. डॉ. आंबादास देशमुख- प्रयोजनमूलक हिंदीः अधुनातन आयाम, शैलजा प्रकाशन, कानपुर

10. htpps://Wikipedia.org/wiki/प्रयोजनमूलक हिंदी

11. www.cstt.nic.in

12. www.rajbhasha.nic.in

13. www.google.com/Top/world/Hindi

परिशिष्ट के आधारपर पारिभाषिक शब्दावली

विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित पारिभाषिक शब्द

अ. क्र.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी भाषा में प्रचिलित पारिभाषिक शब्द
1.	Advance	अग्रिम/पेशगी
2.	Account	खाता/लेखा
3.	Advertisement	विज्ञापन
4.	Advice	परामर्श /सलाह
5.	Assistant	सहायक
6.	Budget	आय व्ययक
7.	Balance	बाकी/शेष
8.	Branch	शाखा
9.	Cash	रोकड
10.	Catalogue	सूचीपत्र
11.	Commerce	वाणिज्य
12.	Communication	संचार/संदेश
13.	Copy	प्रतिलिपि/नकल
14.	Demand Letter	मांगपत्र
15.	Delivery	वितरण
16.	Designation	पदनाम
17.	Export	निर्यात
18.	Fine	दंड/जुर्माना
19.	General Manager	महाप्रबंधक
20.	Government	सरकार
21.	Head	प्रधान
22.	Income Tax	आयकर
23.	Interview	साक्षात्कार
24.	Postman	डाकिया
25.	Prime Minister	प्रधानमंत्री

परिशिष्ट के आधारपर पारिभाषिक वाक्यांश

विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित पारिभाषिक वाक्यांश

अ. क्र.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी भाषा में प्रचिलित पारिभाषिक वाक्यांश
1.	Approved as proposed Suggested	प्रस्ताव के अनुसार अनुमोदित
2.	As soon as possible	यथाशीघ्र
3.	By Order	के आदेश से
4.	Carry Forward	आगे ले जाना
5.	Certified that	प्रमाणित किया जाता है
6.	Confirm Please	कृपया पुष्टि करें
7.	Derelication of duty	कर्तव्य की अवहेलना करें
8.	Duty Complied	विधिवत अनुपाल किया जाय
9.	Give Details	विवरण प्रस्तुत कीजिए
10.	Hard and Fast rule	सुनिश्चित नियम
11.	Immediate action	तत्काल कारवाई
12.	Enclosure to the Letter	पत्र का संलग्नक/अनुलग्नक
13.	For perusal	अवलोकनार्थ
14.	I agree	मैं सहमत हूँ
15.	In due case	यथा समय /यथावधि
16.	Kindly acknowledge receipt	कृपया रसीद भेजे
17.	May be sanctioned	स्वीकृति दी जाए
18.	Necessary action may be taken	आवश्यक कार्यवाही की जाए
19.	On probation	परीविक्षाधीन
20.	Posting and transfer	तैनाती और स्थानांतरण
21.	Subsequent action	परवर्ति कार्यवाही
22.	Through proper channel	उचित माध्यम से
23.	Verified and found correct	सत्यापित किया और सही पाया
24.	Valid reason may be given	सही कारण दिए जाएं
25.	Zonal Advisory committee	अंचल /मंडल परामर्श समिति

बी. ए. भाग- तीन, सत्र- 5, प्रश्नपत्र- XI

हिंदी भाषा

अध्यापन वर्षः 2024-25, 2025-26, 2026-27

परीक्षाएँ- 2025, 2026, 2027

प्रस्तावनाः (Introduction)

हिंदी भारत की सर्वाधिक व्यावहारिक भाषा है। वस्तुतः हिंदी भारतीय लोकभाषाओं का समूह है। भारत के भाषिक दायरे में हम यह पाते हैं कि विदेशी यात्रियों ने भारत की लोकभाषाओं को ही हिंदी भाषा कहा। अतः हिंदी भारतीय लोगों के वैचारिक आदान-प्रदान का साधन निरंतर बनी रही है। भारतीय इतिहास के साथ-साथ हिंदी भाषा परिवर्तन के दौर पार करते-करते लोकभाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा और विश्वभाषा तक पहुँच चुकी हैं। 14 सितंबर, 1949 को भारतीय संविधान की धारा 343(1) के तहत हिंदी भारत की राजभाषा बनी। संविधान सभा ने हिंदी को राष्ट्रहितवर्धिनी माना और इस उत्तरदायित्व को हिंदी ने निरंतर निभाया भी हैं। भारतीय विकास में हिंदी भाषा सहयोगी रही हैं। आज हम पाते हैं कि हिंदी केवल बोलचाल या साहित्य की भाषा तक सीमित नहीं रही बल्कि वह राजनीति, ज्ञान-विज्ञान, शिक्षा, कार्यालयीन व्यवहार, मीडिया, सूचना- प्रौद्योगिकी, बाजार एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी जनसंपर्क की भाषा का दायित्व निभा रही हैं। प्रस्तुत पाठयक्रम में हिंदी के आद्योपरांत एवं विकास को अधोरेखित किया गया है। अतः हिंदी भाषा का अध्ययन हर भारतीयों को आत्मनिर्भर बनने के लिए नितांत आवश्यक हो गया है, प्रस्तुत पाठ्यक्रम इसकी पूर्ति करता है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य: (Objective of the Course)

1. हिंदी भाषा का सामान्य परिचय कराना।
2. भाषा के विविध रूपों का परिचय कराना।
3. हिंदी भाषा एवं लिपि के उद्‌भव और विकास का परिचय कराना।
4. भाषिक कौशल से अवगत कराना।
5. लिपि की अवधारणा से परिचित कराना।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणामः (Course Learning Outcomes)

1. छात्र हिंदी भाषा से परिचित होंगे।
2. भाषा के विविध रूपों से परिचित होंगे।
3. हिंदी भाषा एवं लिपि के उद्‌भव और विकास से परिचित होंगे।
4. भाषिक कौशल से अवगत होंगे।
5. लिपि की अवधारणा से परिचित होंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रियाः (Teaching Learning Process)

1. कक्षा व्याख्यान
2. गूट चर्चा
3. भाषा प्रयोगशाला कार्य

CBCS PATTERN B. A. III, SEM. 5, Paper- XI

[Credits: Theory-(04), Practical's-(00)]

Total Theory Lectures-(60), Credit 4

अध्ययनार्थ विषयः

इकाई- 1: भाषा **(Lectures 15, Credit 1)**

1. भाषा की परिभाषा एवं उसकी विशेषताएँ

2. भाषा के विविध रूपः- बोली, परिनिष्ठित भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा

इकाई- 2: हिंदी भाषा और बोलियाँ **(Lectures 15, Credit 1)**

1. हिंदी शब्द की व्युत्पत्ति एवं हिंदी भाषा का उद्‌भव और विकास

2. हिंदी की प्रमुख बोलियों का सामान्य परिचयः- ब्रज, अवधी, राजस्थानी, भोजपुरी, पहाड़ी

इकाई- 3: हिंदी शब्द समूह और भाषाई कौशल **(Lectures 15, Credit 1)**

1. हिंदी का शब्द समूहः– तत्सम, तद्‌भव, देशज, विदेशी शब्दों का सोदाहरण परिचय

2. भाषाई कौशलः- श्रवण कौशल, पठन कौशल, मौखिक कौशल, लेखन कौशल

इकाई- 4: देवनागरी लिपि **(Lectures 15, Credit 1)**

1. लिपि का सामान्य परिचयः- खरोष्ठी लिपि, ब्राह्मी लिपि

2. देवनागरी लिपिः- उद्‌भव एवं विकास, देवनागरी लिपि की विशेषताएँ

<u>प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक विभाजन</u>

1. बहुविकल्पी आठ प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	08
2. लघुत्तरी प्रश्न (दो या तीन वाक्यों में उत्तर अपेक्षित) (6 में से 4) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	12
3. दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	10
4. दीर्घोत्तरी एक प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	10

कुल अंक = 40

Equivalent Subject for Old Syllabus

Sr.No.	Name of the Old Paper SEM-V	Name of the New Paper SEM-V
1	हिंदी भाषा	हिंदी भाषा

संदर्भ-ग्रंथ सूचीः-

1. हिंदी भाषा का इतिहास- डॉ.धीरेंद्र वर्मा, हिंदुस्थान अकादमी, इलाहाबाद
2. हिंदी भाषाः उद्‌भव और विकास- डॉ.उदयनारायण तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, अलाहाबाद संस्क.2017
3. हिंदीः उद्‌भव. विकास और रूप- डॉ.हरदेव बाहरी, किताब महल प्रकाशन, दिल्ली संस्क.2018
4. हिंदी भाषा का इतिहास- डॉ.लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, लोकभारती प्रकाशन, अलाहाबाद 1972
5. हिंदी भाषा की लिपि संरचना- डॉ.भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्क.2011
6. नागरी लिपिः रूप और सुधार- मोहन ब्रिज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्क.2017
7. हिंदी भाषा. राजभाषा और नागरी लिपि- डॉ.परमानंद पांचाळ, हिंदी बुक सेंटर, दिल्ली 2008
8. भाषिकी हिंदी भाषा तथा भाषा शिक्षण- डॉ.अंबादास देशमुख, अतुल प्रकाशन, कानपुर 1999
9. भाषा प्रौद्योगिकी - डॉ. सुभाष सिंह, डी.पी.एस. पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली-52
10. हिंदी भाषाः विकास के सोपान, डॉ. महेंद्रपाल शर्मा
11. हिंदी प्रदेश की बोलियाँ और उनका समाज, 'वागर्थ', मार्च 2024, (पृ. 68)
12. https://hi.wikibooks.org/wiki

PUNYASHLOK AHILYADEVI HOLKAR

SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR

पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर
सोलापूर विद्यापीठ
।। विद्यया संपन्नता ।।
NAAC Accredited-2022
'B++' Grade (CGPA-2.96)

Name of the Faculty – Humanities

मानव्यविद्या शाखा

New CBCS Pattern Syllabus

चयनाधारित श्रेयांक पद्धति

Name of the Course B. A. III (Hindi) Sem. VI

With effect from Nov. – 2024-25

बी.ए. भाग- तीन, सत्र- 6, प्रश्नपत्र- XII
विशेष लेखक: काशीनाथ सिंह
अध्यापन वर्षः 2024-25, 2025-26, 2026-27
परीक्षाएँ: 2025, 2026, 2027

प्रस्तावनाः (Introduction)

काशीनाथ सिंह समकालीन कथा-साहित्य के एक चर्चित रचनाकार हैं। उनके उपन्यासों में आधुनिक मूल्य उजागर हुए हैं। आधुनिक युग में देश में जो परिवर्तन आए हैं उन्हें आपकी रचनाओं में भलीभांति देख सकते हैं। लेखन की उत्कृष्टता, परिवेश की जटिलता और मानवीय सामाजिक और सांस्कृतिक विशिष्टता को दर्शानेवाली आपकी रचनाएँ सही अर्थों में हिंदी साहित्य की धरोहर हैं। साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित उनका 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। यह उपन्यास भूमंडलीकरण के तहत संवेदना, संबंध और सामूहिकता की दुनिया में हुआ निर्मम ध्वंस और परिवर्तन को रेखांकित करता है। यह उपन्यास वर्तमान मानव समाज की त्रासदी को प्रस्तुत करता है। इसमें एक और उपभोक्तावाद की क्रूरताओं का खंडन है तो दूसरी और शोषितों की अस्मिता को जगाने का प्रयास भी है। काशीनाथ सिंह का लेखन भूमंडलीकरण के बाद बन रहे भारतीय समाज की प्रमाणिकता से पड़ताल करता है।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: (Objective of the Course)

1. काशीनाथ सिंह के उपन्यास संसार का परिचय कराना।
2. छात्रों में उपन्यास विधा के प्रति अभिरुचि और समीक्षा दृष्टि विकसित कराना।
3. छात्रों में राष्ट्रीय, सामाजिक एवं मानवीय दृष्टिकोण एवं दायित्व विकसित कराना।
4. 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास का तात्विक अध्ययन कराना।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम : (Learning Outcomes)

1. काशीनाथ सिंह के उपन्यास संसार से परिचित होंगे।
2. छात्रों में उपन्यास विधा के प्रति अभिरुचि और समीक्षा दृष्टि विकसित होगी।
3. छात्रों में राष्ट्रीय, सामाजिक एवं मानवीय दृष्टिकोण एवं दायित्व विकसित होगा।
4. 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास का तात्विक अध्ययन करेंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया: (Teaching Learning Process)

1. कक्षा व्याख्यान
2. गूट चर्चा
3. उपन्यास का मंचन

CBCS PATTERN B. A. III, SEM. 6, Paper- XII

[Credits: Theory-(04), Practical's-(00)]

Total Theory Lectures-(60), Credit 4

पाठ्यपुस्तक: रेहन पर रग्घू (उपन्यास) काशीनाथ सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ल्ली

अध्ययनार्थ विषय

इकाई- 1 : उपन्यासकार काशीनाथ सिंह **(Lectures 15, Credit 1)**

1. काशीनाथ सिंह का उपन्यास संसार
2. काशीनाथ सिंह के उपन्यासों की विशेषताएँ
3. समकालीन उपन्यासों में काशीनाथ सिंह का स्थान

इकाई- 2 : रेहन पर रग्घू **(Lectures 15, Credit 1)**

1. उपन्यास की कथावस्तु
2. उपन्यास के पात्र और चरित्र चित्रण
3. उपन्यास में संवाद

इकाई- 3 : रेहन पर रग्घू **(Lectures 15, Credit 1)**

1. उपन्यास में देशकाल तथा वातावरण
2. उपन्यास की भाषा शैली
3. उपन्यास का उद्देश्य

इकाई- 4 : रेहन पर रग्घू **(Lectures 15, Credit 1)**

1. उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता
2. उपन्यास में चित्रित समस्याएँ
3. 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास की प्रासंगिकता

प्रश्नपत्र का स्वरूप एवं अंक विभाजन

प्रश्नः1	बहुविकल्पी आठ प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	08
प्रश्नः2	लघुत्तरी प्रश्न (6 में से 4) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	12
प्रश्नः3	ससंदर्भ व्याख्या (3में से 2) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	10
प्रश्नः4	दीर्घोत्तरी प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	10
		कुल अंकः 40

Equivalent subject for old syllabus

Sr. No.	**Name of the old Paper SEM-VI**	**Name of the New Paper SEM-VI**
1.	विशेष लेखक: भगवानदास मोरवाल	विशेष लेखक: काशीनाथ सिंह

संदर्भ ग्रंथ

1. काशीनाथ सिंह का चिंतन और साहित्य, ऋचा श्रीवास्तव, मनीष प्रकाशन, दिल्ली
2. काशी के नाम, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. बातें हैं बातों का क्या, संपादक पल्लव, राजकमल प्रकाशन
4. हंसा करो पुरातन बात, संपादक शशिकुमार सिंह
5. कहन पत्रिका का विशेषांक 'साठ के काशी और काशी का साठ', संपादक- मनीष दुबे, 2000 (पुस्तक रूप में कासी पर कहन मीरा पब्लिकेशन्स, न्याय मार्ग, इलाहाबाद से)
6. 'बनास जन' का विशेषांक 'गल्पेतर गल्प का ठाठ' 'काशी का अस्सी' पर केंद्रित - 2010 (संपादक- पल्लव, पुस्तक रूप में 'अस्सी का काशी:गल्पेतर गल्प का ठाठ', साहित्य भंडार, चाहचंद रोड, इलाहाबाद से)
7. संबोधन का विशेषांक (अक्टूबर 2012 - जनवरी 2013) संपादक- कमर मेवाड़ी
8. http://gadyakosh.org
9. https://www.youtube.com/watch?v=SBQN0tMR3_0

बी. ए. भाग- तीन, सत्र- 6, प्रश्नपत्र- XIII
आलोचना
अध्यापन वर्षः 2024-25, 2025-26, 2026-27
परीक्षाएँ- 2025, 2026, 2027

प्रस्तावनाः (Introduction)

साहित्य सृजन एक प्रतिभा है। गद्य एवं पद्य की विभिन्न विधाओं का सृजन साहित्यकार अपनी अनुभूति पर करता है। समाज को आदर्शवादी सोच एवं दिशा निर्देशन का उत्तरदायित्व करना साहित्य का आद्यकर्तव्य समझना अतिशयोक्ति नहीं है। उसी तरह प्रकाशित साहित्य की आलोचना भी महत्वपूर्ण होती है। आलोचना एवं समीक्षा साहित्य की कसौटी के समान ही है। साहित्य में प्रयुक्त भावपक्ष एवं कलापक्ष की समीक्षा अनिवार्य होती है। साथ ही किसी भी रचना को पढ़ने के पश्चात रसास्वाद की आवश्यकता अधिक होती है। रचना रसास्वाद से युक्त हो तो पाठकों में उत्साह निर्माण होता है। इसी दृष्टि से साहित्य के उपादानों का प्रयोग तथा साहित्य में उतरे गुणों को परखना महत्वपूर्ण होता है, जिससे साहित्य के मर्म तथा मूल्यों को परखा जाता है। अतः इन्हें परखने के लिए समालोचना की आवश्यकता होती है। समालोचना लेखक और पाठक दोनों के लिए आवश्यक होती है।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: (Objective of the Course)

1. छात्रों को साहित्य के उपकरणों को समझाना।
2. रसानुभूति की प्रक्रिया को समझाना।
3. साहित्य के मूल्य और गुणों सेअवगत कराना।
4. विभिन्न आलोचना पद्धतियों तथा विभिन्न विमर्शों को समझाना।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम: (Course Learning Outcomes)

1. छात्रों को साहित्य के उपकरणों को समझेंगे।
2. रसानुभूति की प्रक्रिया को समझेंगे।
3. साहित्य के मूल्य और गुणों से अवगत होंगे।
4. विभिन्न आलोचना पद्धतियों तथा विभिन्न विमर्शों को समझेंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रियाः (Teaching Learning Process)

1. कक्षा व्याख्यान
2. गूट चर्चा
3. साहित्यिक विधाओं की समिक्षा

CBCS PATTERN B. A. III, SEM. 6, Paper- XIII

[Credits: Theory-(04), Practical's-(00)]

Total Theory Lectures-(60), Credit 4

अध्ययनार्थ विषय -

इकाई- 1: आलोचना **(Lectures 15,Credit 1)**

1. आलोचनाः स्वरूप, परिभाषा एवं आलोचक के गुण
2. आलोचना के प्रकार: व्याख्यात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, मार्क्सवादी

इकाई- 2: साहित्य के उपकरण **(Lectures 15,Credit 1)**

1. मिथकः सामान्य परिचय
2. प्रतीकः सामान्य परिचय
3. छंद: मात्रिक छंद:- दोहा, सोरठा, गीतिका
   वर्णिक छंद:- वसंततिलका, इंद्रवज्रा, मंदाक्रांता

इकाई- 3: विभिन्न विमर्श **(Lectures 15, Credit 1)**

1. स्त्री विमर्शः सामान्य परिचय
2. किसान विमर्शः सामान्य परिचय
3. आदिवासी विमर्शः सामान्य परिचय
4. किन्नर विमर्शः सामान्य परिचय

इकाई- 4: रस **(Lectures 15, Credit 1)**

1. रस की परिभाषा
2. रस के अंगों का सामान्य परिचय
3. रस के भेद - श्रृंगार, वीर, करूण, अद्भुत, भयानक, रौद्र ,बीभत्स, हास्य, शांत, रस का सोदारण परिचय

प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक विभाजन

1. बहुविकल्पी आठ प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर) 08

2. लघुत्तरी प्रश्न (दो या तीन वाक्यों में उत्तर अपेक्षित) (6 में से 4) (पूरे पाठ्यक्रम पर) 12

3. दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर) 10

4. दीर्घोत्तरी एक प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर) 10

कुल अंक = 4**0**

Equivalent Subject for old Syllabus

Sr. No.	**Name of the old paper Sem. VI**	**Name of the paper Sem. VI**
	आलोचना	आलोचना

संदर्भ ग्रंथ

1. भगीरथ मिश्र - काव्यशास्त्र
2. डॉ. गोविंद त्रिगुणायत - शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत
3. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त - भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत
4. डॉ. तेजपाल चौधरी - भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य की रूपरेखा
5. डॉ. चंद्रभानु सोनवणे - साहित्यशास्त्र
6. डॉ. संजय नवेल - साहित्यशास्त्र
7. सुमन मलिक - साहित्य विवेचन
8. डॉ. ज्ञानराज गायकवाड - भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र
9. डॉ. विठठल भालेराव - भारतीय सहित्यशात्र
10. कुमार विमल - सौंदर्यशास्त्र के तत्व
11. डॉ. रविंद्रकुमार शिरसाट - साहित्यिक विमर्श
12. रामेश्वरलाल खंडेलवाल- आलोचना के आधारस्तंभ
13. सं. शांतिस्वरूप गुप्ता - साहित्यिक निबंध
14. देशराजसिंह भाटी - भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र

बी.ए. भाग- तीन, सत्र- 6, प्रश्नपत्र-XIV

आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास (सन 1900 ई. से सन 2020 ई. तक)

अध्यापन वर्ष - 2024-25, 2025-26, 2026-27

परीक्षाएँ - 2025, 2026, 2027

प्रस्तावना: (Introduction)

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल कई अर्थों में आधुनिक है। ब्रिटिशों का आगमन भारतीयों के लिए नई दुनिया से संपर्क का माध्यम सिद्ध हुआ। ब्रिटिशों के दौर में ही भारत में औद्योगिक क्रांति हुई। परंपरागत भारतीय व्यवसाय में मशीन का प्रवेश हुआ। शिक्षा व्यवस्था में भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए और यहाँ स्कूल, कॉलेज, युनिवर्सिटी की शिक्षा व्यवस्था आयी। ब्रिटिशों का आगमन भारतीय समाज व्यवस्था में तेजी से परिवर्तन का कारक बना। भारत का पढा-लिखा तबका बौद्धिकता के बल पर तर्क-वितर्क करने लगा और विसंगतियों को अभिव्यक्त करने लगा। इसमें साहित्यकार सबसे आगे था। इसी दौर में साहित्य की कईं विधाओं का अविर्भाव हुआ। सर्वहारा की बात साहित्य में होने लगी। समानता, स्वतंत्रता, राष्ट्रीयता, भाईचारा जैसी चीजें साहित्य में आने लगी। बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में ब्रिटिशों की गुलामी से देश को स्वतंत्रता मिले, इसलिए कईं आंदोलन चले। कालांतर में देश स्वतंत्र हुआ। लोकतंत्र की प्रतिष्ठा हुई और नया भारत निर्माण हुआ। नए भारत में विभिन्न विमर्श उभर कर आए, जिसका माध्यम साहित्य रहा है। इन सबसे छात्रों को यह पाठ्यक्रम अवगत कराएगा।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य: (Objective of the Course)

1. आधुनिक काल की अवधारणा से अवगत कराना।
2. आधुनिक काल में विकसित साहित्य की विभिन्न विधाओं का परिचय कराना।
3. आधुनिक काल के साहित्य पर पडे विभिन्न विचारधाराओं के प्रभाव से अवगत कराना।
4. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी साहित्य का अंतर्संबंध का बोध कराना।
5. अस्मितामूलक साहित्य से परिचित कराना।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम : (Learning Outcomes)

1. आधुनिक काल की अवधारणा से अवगत होंगे।
2. आधुनिक काल में विकसित साहित्य की विभिन्न विधाओं से परिचित होंगे।
3. आधुनिक काल के साहित्य पर पडे विभिन्न विचारधाराओं के प्रभाव से अवगत होंगे।
4. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी साहित्य के अंतर्संबंध का बोध होगा।
5. अस्मितामूलक साहित्य से परिचित होंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया: (Teaching Learning Process)

1. कक्षा व्याख्यान
2. गूट चर्चा
3. सेमिनार

CBCS PATTERN B. A. III, SEM. 6, Paper- XIV
[Credits: Theory-(04), Practical's-(00)]
Total Theory Lectures-(60), Credit 4

अध्ययनार्थ विषय

इकाई- 1: आधुनिक काल **(Lectures 15, Credit 1)**

1. आधुनिक काल की विभिन्न विचारधाराएँ -
   आंबेडकरवाद, गांधीवाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद
2. हिंदी नवजागरण और उसकी अवधारणा
3. भारतेंदु युग और उसकी प्रवृत्तियाँ
4. द्विवेदी युग और उसकी प्रवृत्तियाँ

इकाई- 2: आधुनिक काल की काव्यधाराएँ **(Lectures 15, Credit 1)**

1. छायावाद: विशेषताएँ
2. प्रगतिवाद: विशेषताएँ
3. प्रयोगवाद: विशेषताएँ

इकाई- 3: विविध विमर्श एवं आधुनिक गद्य विधाओं का उद्भव और विकास **(Lectures 15, Credit 1)**

1. दलित विमर्श
2. स्त्रीवादी विमर्श
3. आदिवासी विमर्श
4. उपन्यास
5. नाटक
6. आत्मकथा

इकाई- 4: आधुनिक काल के प्रतिनिधि रचनाकार **(Lectures 15, Credit 1)**

1. मनोहर श्याम जोशी
2. वीरेन डंगवाल
3. राजेश जोशी
4. मंगलेश डबराल
5. उदय प्रकाश

प्रश्नपत्र का स्वरूप एव अंक विभाजन

प्रश्न 1 बहुविकल्पी आठ प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	08
प्रश्न 2 लघुत्तरी प्रश्न (दो या तीन वाक्यों में उत्तर अपेक्षित) (6 में से 4) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	12
प्रश्न 3 दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	10
प्रश्न 4 दीर्घोत्तरी प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	10

कुल अंक 40

Equivalent Subject for old Syllabus

Sr. No.	Name of the Old Paper Sem. – VI	Name of the New Paper Sem. – VI
1.	आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास (सन 1900 से सन 2010 तक)	आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास (सन 1900 से सन 2020 तक)

संदर्भ ग्रंथः

1. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेंद्र
2. भारतेंदु और हिंदी नवजागरण की समस्याएँ - रामविलास शर्मा
3. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण - रामविलास शर्मा
4. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास - रामस्वरूप चतुर्वेदी
5. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ - नामवर सिंह
6. हिंदी का गद्य साहित्य - रामचंद्र तिवारी
7. छायावादोत्तर हिंदी गद्य साहित्य - विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
8. आधुनिक साहित्य – आचार्य नंददुलारे वाजपेयी
9. https://youtu.be/7y7D6iVBoTw
10. https://youtu.be/X3ZeeCsIYGM
11. https://youtu.be/VeVGP2IJRnO
12. https://www.youtube.com/watch?v=0eW67ZkG8ZI

बी. ए. भाग- तीन, सत्र- 6, प्रश्नपत्र- XV

व्यावहारिक हिंदी

अध्यापन वर्ष : 2024-25, 2025-26, 2026-27

परीक्षाएँ : 2024, 2025, 2026, 2027

प्रस्तावना: (Introduction)

व्यावहारिक हिंदी के रूप में हिंदी भाषा का बहुमुखी विकास हो रहा है। हिंदी का बैंक, दूरदर्शन, सरकारी कार्यालय, रेल, मीडिया, फिल्म, इंटरनेट, विज्ञापन आदि में बड़े पैमाने पर प्रयोग हो रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भी हिंदी की महत्ता को स्वीकार कर उसके जरिए अपना व्यवहार शुरू किया है। सभी स्थानों पर अब हिंदी भाषा का प्रयोग किया जा रहा है। हिंदी भाषा ने अनुवाद के माध्यम से एक ओर भारतवर्ष को जोड़ने हेतु सेतु का कार्य किया है तो दूसरी ओर वैश्विक संदर्भ, ज्ञान, विज्ञान और तकनीकी को अपनाकर स्वयं को उसके अनुकूल बनाया है। हिंदी भाषा के इस रूप ने रोजगार में कई अवसर प्रदान किए हैं। अतः हिंदी के इस रूप को जानना अनिवार्य है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य: (Objective of the Course)

1. अनुवाद का स्वरूप और महत्त्व से अवगत कराना।
2. विज्ञापन की दुनिया और व्यवहार से परिचित कराना
2. अनुवाद और विज्ञापन लेखन की क्षमता विकसित कराना।
3. वाणिज्यिक पत्राचार से छात्रों को अवगत कराना।
4. दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रयोग से अवगत कराना।
5. व्यावहारिक हिंदी भाषा के माध्यम से रोजगारपरक कौशल को विकसित कराना।
6. ऑनलाइन खरीददारी पोर्टल से छात्रों को अवगत कराना।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम: (Course Learning Outcomes)

1. छात्र अनुवाद के स्वरूप और महत्व से परिचित होंगे।
2. छात्रों में अनुवाद और विज्ञापन लेखन की क्षमता से परिचित होंगे।
3. छात्र दैनिक व्यवहार में व्यावहारिक हिंदी भाषा का प्रयोग करेंगे।
4. छात्रों में रोजगारपरक हिंदी भाषा का कौशल निर्माण होगा।
5. ऑनलाइन खरीददारी के विविध पोर्टल से छात्र परिचित होकर दैनिक व्यवहार में उसका प्रयोग करेंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया: (Teaching Learning Process)

1. कक्षा व्याख्यान
2. गूट चर्चा
3. वाणिज्य पत्राचार का लेखन
4. व्यावहारिक अनुवाद का लेखन

CBCS PATTERN B. A. III, SEM. 6, Paper- XV

[Credits: Theory-(04), Practical's-(00)]

Total Theory Lectures-(60), Credit 4

अध्ययनार्थ विषय

इकाई - 1: अनुवाद **(Lectures 15, Credit 1)**

1. अनुवाद: स्वरूप, अर्थ और परिभाषा
2. अनुवाद के प्रकार (प्रकृति के आधार पर)-
   शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, सारानुवाद, आशु अनुवाद
3. अनुवादक के गुण

इकाई -2: विज्ञापन **(Lectures 15, Credit 1)**

1. विज्ञापन: स्वरूप, अर्थ और परिभाषा
2. विज्ञापन के तत्व
2. विज्ञापन का महत्त्व

इकाई -3: वाणिज्य पत्राचार **(Lectures 15, Credit 1)**

1. वाणिज्य पत्राचार: स्वरूप
2. पूछताछ पत्र
3. क्रयादेश पत्र
4. भुगतान पत्र
5. शिकायती पत्र

इकाई -4 : व्यावहारिक हिंदी **(Lectures 15, Credit 1)**

1. व्यावहारिक अनुवाद (मराठी/अंग्रेजी वाक्यों का हिंदी में अनुवाद)
2. आकाशवाणी, रेल, प्रेस, दूरदर्शन, बैंक में प्रयुक्त प्रयोजनमूलक हिंदी
   (प्रत्यक्ष भेंट तथा निरीक्षण के आधार पर वृत्तांत लेखन)
3. विज्ञापन लेखन (विषय या चित्र के आधार पर)
4. ई-मेल, ऑनलाइन खरीददारी पोर्टल

प्रश्नपत्र का स्वरूप एवं अंक विभाजन

प्रश्नः1	बहुविकल्पी आठ प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	08
प्रश्नः2	लघुत्तरी प्रश्न (6 में से 4) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	12
प्रश्नः3	दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ)(पूरे पाठ्यक्रम पर)	10
प्रश्नः4	दीर्घोत्तरी प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	10
	कुल अंक	**40**

Equivalent Subject for Old Syllabus

Sr. No	Name of the Old paper SEM-VI	Name of the New Paper SEM-VI
1.	व्यावहारिक हिंदी	व्यावहारिक हिंदी

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. विनोद गोदरे - प्रयोजनमूलक हिंदी वाणी प्रकाशन ,नयी दिल्ली
2. डॉ. सुनीलकुमार लवटे - हिंदी वेब साहित्य
3. डॉ. रामप्रकाश, डॉ. दिनेश गुप्त - प्रयोजनमूलक हिंदी
4. डॉ. हरिमोहन - कंप्यूटर और हिंदी
5. डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी - अनुप्रायोगिक हिंदी
6. डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी - व्यावहारिक हिंदी और रचना
7. डॉ.दंगल झाल्टे - प्रयोजनमूलक हिंदी: सिध्दांत और प्रयोग
8. कैलाशनाथ पांडेय - प्रयोजनमूलक हिंदी की नई भूमिका
9. डॉ.के.पी. शहा- व्याहारिक पत्रलेखन, मेहता पब्लिशिंग हाऊस ,पुणे
10. डॉ. चन्द्रप्रकाश मिश्र- मीडिया लेखन : सिद्धांत और व्यवहार, संजय प्रकाशन, नयी दिल्ली
11. डॉ. अंबादास देशमुख - प्रयोजनमूलक हिंदी : आधुनातन आयाम - शैलजा प्रकाशन, कानपूर
12. डॉ. माधव सोनटक्के - प्रयोजनमूलक हिंदी : प्रयुक्ति और अनुवाद
13. www.Wikipedia.org/wiki/Meesho
14. www.Wikipedia.org/wiki/Flipkart
15. www.Wikipedia.org/wiki/Amazon
16. www.en.wikipedia.org/wiki/Tata_Cliq
17. www.cdacnoida.in
18. www.egyankosh.ac.in
19. www.ctb.rajbhasha.gov.in

बी. ए. भाग- तीन, सत्र- 6, प्रश्नपत्र- XVI
भाषाविज्ञान
अध्यापन वर्षः 2024-25, 2025-26, 2026-27
परीक्षाएँ- 2025, 2026, 2027

प्रस्तावना (Preamble)

मन और मस्तिष्क की संयुक्त प्रक्रिया से उत्पन्न विचारों की मौखिक प्रकट अभिव्यक्ति भाषा है। यह भाषा प्रतीकात्मक होती हैं, जिसके द्वारा मानव अपने विचार दूसरों पर प्रकट करता है। उस वैचारिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया का वैज्ञानिक अध्ययन करने की विशिष्ट पध्दति भाषाविज्ञान है। भाषाविज्ञान को कंपरेटीव ग्रामर (Comparative Grammar), कंपरेटीव फिलालोजी (Comparative Philology), आगे चलकर फिलालोजी तथा लिंग्विस्टिक्स (Linguistic) नाम दिए गए। आधुनिक समय में भाषाविज्ञान, भाषाशास्त्र, भाषाविचार, भाषालोचन तथा तुलनात्मक भाषाविज्ञान आदि नाम दिए गए। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन करने की प्रक्रिया भाषाविज्ञान है। भाषा की उत्पत्ति, गठन, प्रकृति एवं विकास आदि की सम्यक व्याख्या करते हुए सिध्दांतों का निर्धारण भाषाविज्ञान करता है। भाषा के रूप में ध्वनि का उच्चारण, संवहन और श्रवण की प्रक्रिया से मनुष्य अनभिज्ञ है। इसे जानने के लिए मनुष्य की जिज्ञासा निरंतर बनी हुई है। इस जिज्ञासा की पूर्ति भाषाविज्ञान करता है। भाषाविज्ञान की अनुप्रयुक्तता विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में भी दिखाई देती है। उसी के सहारे आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI- Artificial Inelegancy) जैसे संसाधनों का विकास होता हुआ दिखाई दे रहा है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य: (Objective of the Course)

1. भाषा के प्रति वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान कराना।
2. भाषाविज्ञान का सामान्य परिचय कराना।
3. ध्वनि उच्चारण की शुध्दता एवं प्रक्रिया से परिचित कराना।
4. पद और अर्थ से परिचित कराना।
5. संगणकीय भाषाविज्ञान का परिचय कराना।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम: (Course Learning Outcomes)

1. छात्रों में भाषा के प्रति वैज्ञानिक दृष्टि विकसित होंगी।
2. भाषाविज्ञान से परिचित होंगे।
3. ध्वनि उच्चारण की शुध्दता एवं प्रक्रिया से परिचित होंगे।
4. पद और अर्थ से परिचित होंगे।
5. संगणकीय भाषाविज्ञान से परिचित होंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रियाः (Teaching Learning Process)

1. कक्षा व्याख्यान
2. गूट चर्चा
3. भाषा प्रयोगशाला कार्य

CBCS PATTERN B. A. III, SEM. 6, Paper- XVI

[Credits: Theory-(04), Practical's-(00)]

Total Theory Lectures-(60), Credit 4

अध्ययनार्थ विषय -

इकाई- 1 : भाषाविज्ञान (Lectures 15, Credit 1)

1. भाषाविज्ञानः- परिभाषा, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं नामकरण

2. भाषाविज्ञान:- भाषाविज्ञान के अध्ययन के लाभ, भाषाविज्ञान की व्याकरण से तुलना

इकाई- 2 : ध्वनि विज्ञान और पद विज्ञान (Lectures 15, Credit 1)

1. स्वनविज्ञान (ध्वनिविज्ञान) - स्वन का अर्थ, परिभाषा, भाषा ध्वनि,
   ध्वनियंत्र और उसकी कार्यप्रणाली (उच्चारण प्रक्रिया), स्वन गुण (ध्वनि गुण)

2. पदविज्ञानः- शब्द और पद, पद और संबंधतत्व, संबंधतत्व के प्रकार

इकाई- 3 : वाक्य विज्ञान और अर्थ विज्ञान (Lectures 15, Credit 1)

1. वाक्य विज्ञानः– वाक्य की परिभाषा, वाक्य की आवश्यकताएँ, अर्थ और रचना की दृष्टि से वाक्य के प्रकार

2. अर्थविज्ञानः- शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ, अर्थ परिवर्तन के प्रमुख कारण

इकाई- 4 : समाज भाषाविज्ञान और संगणकीय भाषाविज्ञान (Lectures 15, Credit 1)

1. समाज भाषाविज्ञानः- स्वरूप एवं संकल्पना, उपयोगिता

2. संगणकीय भाषाविज्ञानः अवधारणा, विषयवस्तु, अनुप्रयोग क्षेत्र

प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक विभाजन

1. बहुविकल्पी आठ प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	08
2. लघुत्तरी प्रश्न (दो या तीन वाक्यों में उत्तर अपेक्षित) (6 में से 4) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	12
3. दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	10
4. दीर्घोत्तरी एक प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	10

कुल अंक = 40

Equivalent Subject for Old Syllabus

Sr.No.	Name of the Old Paper SEM-VI	Name of the New Paper SEM-VI
1	भाषाविज्ञान	भाषाविज्ञान

संदर्भ-ग्रंथ सूचीः-

1. सामान्य भाषाविज्ञान-डॉ.बाबूराम सक्सेना, हिंदी साहित्य सम्मेलन,प्रयागराज 2010
2. भाषाविज्ञान की भूमिका- डॉ.देवेंद्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्क.2008
3. भाषाविज्ञान- भोलानाथ तिवारी, किताब महल प्रकाशन, दिल्ली संस्क.2012
4. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- डॉ.कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी संस्क.2012
5. आधुनिक भाषाविज्ञान- डॉ. राजमणि शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
6. भाषा एवं भाषाविज्ञान एक दृष्टि, भारतीय विद्या संस्थान, वाराणसी संस्क.2014
7. हिंदी भाषाविज्ञान परिचय- डॉ. ज्ञानराज गायकवाड, विद्या प्रकाशन, कानपुर संस्क.2008
8. भाषाविज्ञान- डॉ. तेजपाल चौधरी, विकास प्रकाशन, कानपुर संस्क.2017
9. भाषाविज्ञान के अधुनातन आयाम- डॉ. अंबादास देशमुख, शैलजा प्रकाशन, कानपुर 2009
10. भाषाविज्ञान एवं भाषा विचार- डॉ.मधु खराटे, डॉ.कृष्णा पोतदार, हिंदी बुक सेंटर, दिल्ली 2016
11. समसामयिक अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान- कविता रस्तोगी, अविराम प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
12. आधुनिक भाषाविज्ञान- कृपाशंकर सिंह, चतुर्भुज सहाय, वाणी प्रकाशन, दिल्ली 2008
13. भाषाविज्ञान- दानबहादुर पाठक, प्रकाशन केंद्र, लखनऊ
14. हिंदी भाषा की संरचना- भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्क.2011
15. कंप्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग- डॉ. विजयकुमार मल्होत्रा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
16. भाषाविज्ञान का सैद्धांतिक- अनुप्रयुक्त एवं तकनीकी पक्ष, डॉ.धनजी प्रसाद, प्रिय साहित्य सदन,नई दिल्ली-2011
17. **https://hi.wikipedia.org/wiki/भाषाविज्ञान**
18. Google Search – संगणकीय भाषाविज्ञान / संगणात्मक भाषाविज्ञान